45

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED & MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Volume V
Issue II

ISSN : 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR : 4.205

February 2018

A Galaxy of Scholarly Written Research Papers/Articles

IJMMS

Cosmos

Chief Editor
Dr. V. H. Mane

Executive Editor
Prof. M. P. Shaikh

www.ijmms.in | Email : ijmms14@gmail.com

Scanned with CamScanner

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist. Pune-412 208

Scanned with CamScanner

VOLUME-V (II) Impact Factor: 4.205 ISSN (Print): 2394-207X
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

35	CULTURAL CONFLICT IN KIRAN DESAI'S *"THE INHERITANCE OF LOSS"*	Prof. Pranjali B. Vidyasagar	144-147
36	Literary Theory in Practice: A Case of Arun Kolatkar's Jejuri in light of Intentional Fallacy	Parag Prakash Chaudhari	148-151
37	Impact of ICT on College Libraries	Mr. Sumedh S.Gajbe	152-154
38	महाराष्ट्रातील कृषी विकास आणि पिकरचनेतील बदलत्या प्रवृत्ती	प्रा. डॉ. सोमनाथ वसंतराव पाटील	155-158
39	हरितगृह शेती तंत्राचे अर्थशास्त्र	प्रविण भाऊसाहेब विखे १ प्रा. डॉ. एस. जी. शिंदे २	159-162
40	ग्रामीण विकासात स्थानिक स्वराज्य संस्थांची भूमिका (महाराष्ट्राचा विशेष संदर्भ)	प्रा.डॉ.बोरावके के.एस.	163-165
41	विविध कार्यकारी सेवा सहकारी पत संस्थांचे ग्रामीण विकासातील योगदान (विशेष संदर्भ :कर्जत तालुका, सन १९९९–०० ते २००८–०९)	प्रा.डॉ.सचिन रमेश तोरडमल	166-168
42	भारतातील टोमॅटो उत्पादन व विपणन विषयक समस्या व उपाययोजना	प्रा. साहेबराव दौलत निकम	169-171
43	कृषि व ग्रामिण विकासात नाबार्डची भुमिका	प्रा.वासनीकर शामराव लक्ष्मण	172-173
44	महाराष्ट्रातील शेती: सद्यस्थिती, समस्या आणि आव्हाने	प्रा. डॉ.हनुमंत पोपट शिंदे	174-180
45	मानव अधिकार आणि भारतीय शेतकऱ्यांची सद्यस्थिती	प्रा.डॉ.अंकुश दादाराव काळे	181-184
46	भौगोलिक घटकांचा महाराष्ट्रातील शेतीच्या शाश्वतीकरणावर होणा-या परिणामांचा अभ्यास	प्रा.डॉ. रविंद्र सुदाम भगत	185-188
47	हिंदी कथा साहित्य में समाज एवं संस्कृति	डॉ. बेबी कोलते	189-191
48	समकालीन हिंदी कहानी में चित्रित नारी जीवन	प्रा. नानासाहेब जावळे	192-195
49	फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानियों में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति	डॉ. मनोहर जमदाडे	196-198
50	'हिंदी कथा साहित्य में समाज एवं संस्कृति' (मोहनदास नैमिशराय कृत'महाशुद्र'के संदर्भ में)	डॉ. वंदना तुकाराम काटे	199-201
51	हिंदी आलोचना का विकास एवं स्त्री विमर्श	प्रा.डॉ. भगत सारिका	202-203
52	आलोचना उद्भव और विकास	प्रा.नामदेव शिताेळे	204-207
53	साहित्य एवं आलोचना : पुनर्विचार की आवश्यकता	डॉ. राजेन्द्र खैरनार	208-211
54	Agriculture Planning of Gondia District in Maharashtra State	[1]Dr. Devendra K. Bisen [2]Prof.Hanumant Dattatraya Shinde	212-214

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur.

Scanned with CamScanner

VOLUME-V (II) Impact Factor: 4.205 ISSN (Print): 2394-207X
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानियों में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति

डॉ. मनोहर जमदाडे
एस. एस. ढमढेरे कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, तलेगांव ढमढेरे, तह. शिरूर, जिला–पुणे

हिंदी कथा साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी कथा साहित्य में वे आँचलिक कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी रचनाओं में हमें ग्रामीण समाज का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। गाँव का वातावरण, लोगों का रहन–सहन, ग्रामीण पात्रों की बोलीभाषा, संवाद पढ़कर हम साक्षात उस वातावरण में चले जाते हैं। आँचलिक जनजीवन के सुख–दुःखों का बड़ा मार्मिक वर्णन आपके कथा साहित्य में देखने को मिलता है। रेणुजी ने उपन्यास और कहानियाँ लिखी। 'मैला आँचल' यह उनका प्रसिद्ध आँचलिक उपन्यास है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से गाँव के पात्रों की मनोदशा का बहुत सूक्ष्म चित्रण किया है। साथ ही उनकी कहानियों में ग्रामीण समाज और संस्कृति का सुंदर और सजीव वर्णन देखने को मिलता है।

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित 'पंचलाइट' इस कहानी में ग्रामीण संस्कृति का सुंदर दिग्दर्शन हुआ है। गाँवों में जाति बिरादारी के लिए छोटी–छोटी बातें कितनी महत्वपूर्ण होती है इसका सूक्ष्म अंकन एक छोटी सी घटना को लेकर देखने को मिलती है। बिरादारी में ईर्ष्याभाव और आपसी स्पर्धा का होना स्वाभाविक है। अपनी बिरादरी की प्रतिष्ठा बनी रहे, दूसरों से मदद माँगना या अपनी कमियों को छिपाने के लिए जो छटपटाहट चलती है वह बड़ा ही रंजक है। ग्रामीण लोगों की मनोदशा का बहुत सूक्ष्म अंकन रेणुजी ने किया है। भारत देश गाँवों से बना है। हर गाँव की अपनी संस्कृति होती है, संस्कार होते हैं उसी प्रकार गाँव में जातियाँ होती है और हर जातियों पंचायतें होती है। इस गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं। महतो टोली को छोड़कर सभी के पास पेट्रोमेक्स है, जिसे गाँववाले पंचलाइट कहते हैं। इसी कारण पिछले पंद्रह महीने दंड–जुरमाने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने रामनवमी के मेले में पेट्रोमेक्स खरीदा है। 'पंचलाइट' का होना बहुत बड़ी प्रतिष्ठा की बात है। गाँववालों के लिए यह कोई सामान्य चीज नहीं है। महतो टोली के सरदार अपनी पत्नी को पूजा की तैयारी करने के लिए कहते हैं। किर्तन मंडली खूश है आज पंचलाइट की रोशनी में किर्तन होनेवाला है।

महतों टोली के लोगों में खुशी का माहौल है। सभी लोग सूरज डूबने के पहले ही सरदार के घर पहुँचते हैं। सरदार खुद को बड़ा चतुर समझता है। अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देने लगता है। वह गुड़गुड़ी पीते हुए कहता है – 'दुकानदार ने पहले सुनाया, पूरे पाँच कौडत्री पाँच रुपया। मैंने कहा कि दुकानदार साहेब, यह मत समझिए कि हम लोग एकदम देहाती हैं। बहुत–बहुत पंचलाइट देखा है। उसके बाद दुकानदार मेरा मुँह देखने लगा। बोला, लगता है आप जाति के सरदार हैं। ठीक हैं, जब आप सरदार होकर खुद पंचलाइट खरीदने आए हैं तो जाइए, पूरे पाँच कौड़ी में आपको दे रहे हैं।'[1] उसके बाद दीवानजी भी अपनी चतुराई की बात करता है। सभी लोग बड़ी श्रद्धा भरी निगाहों से देखते हैं।

'पंचलाइट' आ जाता है किन्तु एक सवाल तभी खड़ा होता है, उसे जलाएगा कौन? पंचायत के इज्जत का सवाल खड़ा हो जाता है। उनकी टोले में पंचलाइट का काई भी जानकार नहीं। दूसरे टोले के लोगों को बुलाकर जलाएंगे तो इनकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाएंगी। गाँव के लोगों को इज्जत से बढ़कर कोई भी चीज नहीं होती। दूसरों की मदद माँगना भी उन्हें स्वीकृत नहीं है। टोली के कुछ लोग कहते हैं – 'पहली बार नेम–टेम करके, शुभ–लाभ करके दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलाइट जलेगा? इससे तो अच्छा है कि पंचलाइट पड़ा रहे।[2]

गाँव में ऐसे मौकों पर हँसनेवालों की कमी नहीं होती। लोग उनका मजाक उड़ाना शुरू कर देते कर देते हैं। इस गाँव के राजपूत टोली के लोग हँसते–हँसते कहते हैं – 'कान पकड़कर पंचलाइट के सामने पाँच बर

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur,
Dist Pune-412 208
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उठो–बैठो, तुरन्त जलने लगेगा।'[3] पंच लोग अपमानित होकर भी कुछ नहीं कह पाते। वे अपने अज्ञान से लज्जित होकर चुप बैठते हैं।

गाँव में अक्सर देखने को मिलता है कि टोले में अगर कोई गलत काम करता है तो पंचायत उसका हुक्का–पानी बंद कर देती है। कभी–कभी पंच किसी पर निराश होते हैं तो थोड़ीसी गलती होने पर भी उसे सजा सुनाई जाती है। 'गोधन' नाम का लड़का पंचों द्वारा ऐसा ही शिकार बन गया है। दूसरे गाँव से आकर भी पंचों को उसने पान–सुपारी खाने को नहीं दी है। पंच लोगों को मौका ही चाहिए था जो उन्हें जल्दी ही मिलता है। मुनरी माँ पंचों के पास गोधन की शिकायत करती है कि उसकी बेटी को देखकर वह सलीमा का 'सलम–सलम' वाला गीत गाता है। इस बात को लेकर पंचों ने उसे पंचायत से बाहर कर दिया है। पर मुनरी जातनी हैं कि गोधन को पंचलाइट बालना आता है। पर कहे कैसे? वह अपनी बात सहेली के कान में कहती है। कनेली सरदार से कहती है गोधना जानता है। फिर सरदार दिवान की तरफ देखता है दिवान पंचों की तरफ। जो पंच गोधन को पंचायत से बाहर करते हैं वे ही गोधन को बुलाने को मजबूर हो जाते हैं क्योंकि जाति बिरादरी की इज्जत व्यक्ति से बढ़कर है। पंचों के कहने पर भी गोधन नहीं आता। आखिरकार गुलरीकाकी के बुलाने पर गोधन पंचायत में आता है।

गाँव के लोग पंचों को देवता मानते हैं। पर पंचों की थोडी–सी नासमझ पर कई लोग आलोचना करते हैं। यहाँ पर भी ऐसा ही होता है। गोधन पंचलाइट को जलाने के लिए स्पिरीट माँगता है, जिसे पंच लाना भूल जाते हैं। यह बात जब लोगों को पता चलती है तो वे पंचों की बुद्धिपर अविश्वास प्रकट करते हैं।

गोधन मलसी गरी के तेल से काम चलाता है और पंचलाइट जला देता है। पंचलाइट जलने पर लोग गोधन की प्रशंसा करने लगते हैं। लेखक कहते हैं – पंचलैट से सनसनाहट की आवाज निकलने लगी और रोशनी बढ़ती गई। लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है।[4] पंचलाइट की रोशनी में कीर्तन शुरू हो जाता है। सभी के चेहरे पर मुस्कुराहट दिखाई देने लगती है। गोधन पंचायत की इज्जत बचाकर सभी का दिल जितता है। सरदार गोधन को बहुत प्यार से कहते हैं तुमने जाति की इज्जत रखी है। तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना। पंचायत में शिकायत करनेवाली गुलरी काकी गोधन को रात के खाने का आमंत्रण देती है।

रेणुजी की लाल 'पान की बेगम' इस कहानी में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति का बहुत ही सजीव एवं सुंदर चित्रण हुआ है। साथ ही ग्रामीण स्त्री की मनोदशा का सूक्ष्म अंकन हुआ है। ग्रामीण आँचलिक भाषा का सुंदर प्रयोग लेखक ने किया है। गाँव में छोटी–छोटी घटनाएँ भी बहुत महत्व रखती है। जिसे लेखक के सूक्ष्म निरीक्षण ने कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। एक साधारण सी घटना को लेकर लेखक ने ग्रामीण लोगों का छोटी–छोटी बातों का चित्रण किया है।
जीवन, बोलीभाषा, उनका रहन–सहन, आपसी ईर्ष्या भाव आदि

बिरजू की माँ बैलगाडी में बैठकर 'बलरामपुर' गाँव में नाच देखने के लिए जानेवाले है। इस बात को वह आसपास की सभी स्त्रियों को बड़े गर्व से बताती है। क्योंकि वह अपने परिवार के साथ बैलगाड़ी में बैठकर नाच देखने के लिए जानेवाली है। उनके गाँव में बैलगाड़ी में बैठकर नाच देखने के लिए जाना बहुत बड़ी बात है। इस बात को लेकर कई दिनों से वे तैयारी में लगी है। उसने अपनी पड़ोसियों को भी यह बात कितनी बार बताई है। जिस दिन नाच देखने जाना है वह सुबह से ही मीठी रोटी बनाने की तैयारी में लगी है। उसके पति गाड़ी लाने के लिए सुबह ही घर से निकले हैं। चम्पिया गुड़ लाने के लिए गई है पर बहुत समय होने पर भी घर नहीं लौटती। बिरजू की माँ को लगता है वह जरूर जंगी की पतोहू के घर जाकर बैसकोप गीत सीख रही होगी। समय के साथ बिरजू की माँ का गुस्सा बढ़ता जाता है। उसका शिकार बिरजू भी होता है। माँ का मार खाकर वह आँगन में लोट रहा है। इसी समय पड़ोसीन मखनी फुआ बलरामपुर के बारे में बात छेड़ती है। बिरजू की माँ सारा गुस्सा मखनी पर उतारती है। मखनी फुआ यह बात पानी भरनेवाली स्त्रियों से बढ़ाचढ़ाकर कहती है। सभी स्त्रियों को बिरजू की माँ पर हँसने का मौका मिलता है। इस बात को लेकर बिरजू की माँ और लज्जित हो जाती है, और खुद पर गुस्सा भी प्रकट करती है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist. Pune 412 208
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

जैसे–जैसे दिन ढलने लगता है, बिरजू की माँ का हौसला टूटने लगता है। वह मीठी रोटी बनाने का काम बंद कर चूल्हे में पानी डाल देती है। अपने आप पर भी गुस्सा प्रकट करती है। अपने बच्चों को ढिबरी बुझाकर सोने को कहती है। उसी समय गाडी की आवाज आती है। चम्पिया टाट के परदे के छेद से देखती है बिरजू के बप्पा गाडी लेकर बाहर खड़े है। माँ दोनों बच्चों को चुप रहने को कहती है। बिरजू के बप्पा को वह देरी का कारण पूछती है तो वे कहते है आते आते अपने खेत से आया। धान की बालियों को वे बिरजू की माँ के हाथ में देते हैं। धान की बालियों का धानी रंग देखकर बिरजू की माँ का गुस्सा उतर जाता है। वह मीठी रोटियाँ बनाने के लिए मखनी फुआ को बुलाती है। उसे ही घर संभालने के लिए कहती है। यहाँ तक की उसे रात भर के लिए तम्बाकू की व्यवस्था भी करती है। बैलगाडी में बैठने पर उसके मन का सारा गुस्सा उतर जाता है। गाँव से जाते समय जंगी के पतोहू के घर गाडी रोकती है। जंगी की पतोहू की और बिरजू की माँ एक दूसरे को नीचे दिखाने का मौका ढूँढते रहते। वह बैसकोप के गीत गाती रहती इस बात को लेकर बिरजू की माँ हमेशा गुस्सा प्रकट करती थी। पर आज उसे भी नाच देखने के लिए गाडी में बिठाती है। फिल्मी गीतों के कारण चिढ़नेवाली बिरजू की माँ खूशी के साथ चम्पियाँ से कहती है–'अब एक बैसकोप का गीत गा तो चम्पिया! डरती है काहे? जहाँ भूल जाएगी, बगल में मास्टरनी बैठी है।'[5] बिरजू की माँ के मन में गुस्सा, ईर्ष्याभाव, दुःख की जगह पर प्यार, अपनापन और आनंद उत्पन्न होता है।

संदर्भ :

1. गद्य वैभव – संपादक, डॉ. राजेंद्र खैरनार, पृ. 29
2. वही, पृ. 29
3. वही, पृ. 30
4. वही, पृ. 31
5. कथाधारा – संपादक, डॉ. अनिता नेरे, डॉ. अशोक धुलधुले, पृ. 70

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner